सभी लोग भगवान को मंदिर, मस्जिद, चर्च में ढुंढते हैं लेकिन उन्हें भगवान कहीं भी नहीं मिलते। मानव सेवा ही भगवान की प्राप्ति है।
बेसहारा लोगों की सेवा कर भगवान को प्राप्त करें और इस धरती को स्वर्ग बनायें।

गोलाईदार बनकर धीरे – धीरे फैलना।

उपचार – दाद की दवा लें, आराम न होने पर चमड़ी चिकित्सक के परामर्श से खून की जाँच कराकर दवा लें। खुजली होने पर माचिस की तीली द्वारा खुजली करें और उस तीली को जला दें। खुजली करने के बाद हाथ को साबुन से अच्छी तरफ साफ करें।

पोलियो – पोलियों के विषाणु/किटाणु पानी और हवा के द्वारा शरीर में प्रवेश होते हैं।

लक्षण – पन्द्रह दिन से ज्यादा बीमार रहना, अंगों का सुचारू रूप से कार्य न करना। नसों में खुन के संचालन का रूक जाना।

उपचार – चिकित्सक के परामर्श से ही इलाज और दवा लें।

खसरा – हवा द्वारा, खसरा रोगी के छींकने, खाँसने, बलगम से।

लक्षण – तेज बुखार आना, आँख लाल हो जाना, नाक, आँख से पानी निकलना, बलगम निकलना, मुँह में लाल दाने पड़ना और दाने के अन्दर बीच में नीला – सफेद रंग का होना। पहले माथे पर छाला पड़ना और धीरे – धीरे पुरे शरीर में छाला पड़ना। यह छोटे बच्चों को ज्यादा पकड़ता है तथा कई बार यह रोग डायरिया, निमोनिया, ब्रेन इन्फैक्शन में परिवर्तित हो जाता है।

उपचार – चिकित्सक के परामर्श से ही दवा लें। ज्यादा से ज्यादा आराम करें।

अन्दरूनी बुखार – हवा द्वारा होता है। गाल के नीचले हिस्से में दोनों तरफ सुजन आ जाना। यह बीमारी मौसम के बदलते समय होता है। ठंड आते समय और जाते समय। दो दिन से लेकर पाँच दिन तक हल्का अन्दरूनी बुखार होना।

उपचार – चिकित्सक के परामर्श से दवा लें। दवा न लेने पर भी यह चार से पाँच दिन में ठीक हो जाता है।

स्वाइन फ्लू – हवा द्वारा H1-N1 वायरस के संक्रमण से फैलता है।

लक्षण – बुखार आना, गला और नाक का बन्द होना, बलगम बनना।

उपचार – चिकित्सक को जल्द दिखा कर दवा लें। रोगी को इधर – उधर नहीं घुमना चाहिए और मुँह में मास्क लगा कर रखना चाहिए।

डेंगू – यह मादा (Aedes Aegypti) मच्छर के काटने से होता है।

लक्षण – तेज बुखार, सिर में तेज दर्द, आँख से पानी निकलना, उल्टी आना, जोड़ों में तथा आँख में दर्द, जी मिचलाना, शरीर का असहाय हो जाना। इसके रोगी को बुखार धीरे – धीरे बढ़ता है। रक्त चाप घट जाता है। सही समय पर उपचार न होने पर रोगी की मृत्यु भी हो सकती है।

उपचार – चिकित्सक को तुरन्त दिखायें, तेज बुखार होने पर माथे पर गिली पट्टी रखें।

सावधानी – कूलर, हौदी, नाली को साफ रखें, आसपास मे पानी को एकत्रित न होने दें। जो पानी या नाली नहीं साफ की जा सके तो उसमें केरोसिन तेल डाल दें जिससे मच्छर पैदा न हो।

एचआईबी/एड्स – असुरक्षित यौन संबंध, एड्स रोगी के खून और सूई द्वारा फैलता है।

लक्षण – रोग प्रतिरोधक क्षमता का कम होना। कोई भी बिमारी होने पर जल्द ठीक न होना।

उपचार – चिकित्सक के पास जाकर HIV का टैस्ट करायें और डॉक्टर के परामर्श के अनुसार दवा लें।

ख) असंचारित (Non Communicable) : जिस बीमारी के जीवाणु एक रोगी से दूसरे स्वस्थ शरीर में प्रवेश न हो उसे असंचारित रोग कहते हैं। जैसे कि कैन्सर, डायविटिज, उच्च रक्त चाप जैसी बीमारियाँ। इन सभी प्रकार की बीमारियों में चिकित्सक के परामर्श से ही दवा लें।

ग) जीवन शैली (Life Style) : यह बीमारी किसी भी प्रकार के संक्रमित जीवाणुओं द्वारा नहीं होती है। यह बीमारी अपनी जीवन शैली को बदलने से होती है। जैसे कि हमारी जीवन शैली हमें सिखाती है कि अच्छा व्यवहार, संयम, सुबह पैदल घुमना, व्यायाम, योगाभ्यास आदि। इस जीवन शैली के विरूद्ध जो जीवन जीने की कोशिश करते हैं उन्हें यह बीमारियाँ होती है। जैसे कि धुम्रपान करने वाले व्यक्ति को कैंसर, असंतुलित भोजन करने वाले व्यक्ति को उच्च रक्त चाप, अच्छा व्यवहार न करने वाले व्यक्ति को तिरसकार, ईर्ष्या और क्रोध करने वाले को मानसिक रोग, शराब पीने वाले व्यक्ति के घर की शान्ति भंग होना आदि प्रकार की यह बीमारियाँ जीवन शैली रोग कहलाता है।

सभी प्रकार की बीमारियों को सावधानी, जानकारी द्वारा ही रोकी जा सकती है। स्वस्थ रहने के लिए संस्था के हेल्थ ब्राउसर को पढ़ें और स्वस्थ बनें।

"जानकारी ही सम्पूर्ण बीमारियों का इलाज"

सेवा ही धर्म है!!!

नवजीवन फाउण्डेशन

नवजीवन फाउण्डेशन

गरीब, बेसहारा लोगों की सेवा ही भगवान की सेवा है।!!!

मुख्य कार्यालय :
252, नजर सिंह प्लेस, दूसरी मंजिल, प्लाट नं0 एस – 11,
सन्त नगर, नई दिल्ली – 110065
दूरभाष: 011 – 26238444, फैक्स: 011 – 66620550
मोबाईल नं0: 09313748678, 09213783579
ईमेल : info@navjivanfoundation.org
navjivanfoundation@gmail.com
बेवसाईट: www.navjivanfoundation.org
शाखा: नवजीवन फाउण्डेशन
533, बहादुरगंज (साहबगंज)
फैजाबाद – 224001, उत्तर प्रदेश

"आप संस्था पर विश्वास करें, संस्था इसे साबित आपके सहयोग से करेगी।"

बीमारियों का लक्षण द्वारा इलाज

शरीर के सम्पूर्ण संचालन प्रक्रिया में कठिनाई पैदा होना या शरीर के सामान्य प्रक्रिया में बाधा, थकावट पैदा होना ही बीमारी है। यह बीमारियाँ मुख्य रूप से तीन प्रकार से होती है।

क) संचारित (communicable) ख) असंचारित (non communicable) ग) जीवन शैली (Life style)

क) एक संक्रमित शरीर से दूसरे स्वस्थ शरीर में बीमारी का प्रवेश होना या संक्रमित जीवाणु वातावरण के माध्यम से एक संक्रमित शरीर से स्वस्थ शरीर में संक्रमित जीवाणुओं का प्रवेश होना ही संचारित रोग कहलाता है। इस प्रक्रिया द्वारा अनेकों प्रकार की बीमारियाँ पैदा होती हैं। इसमें कुछ इस प्रकार है। जैसे :- 1) हैजा (Choleara) 2) ज्वर (Typhoid) 3) पीलिया (Hepatitis/Jaudice) 4) फ्लू (Influenza/Flu) 5) तपेदीक/क्षयरोग (Tuberculosis /TB) 6) मलेरिया (Malaria) 7) टेटनस (Tatanus) 8) खाँसी, जुकाम (Cough & Cold) 9) चेचक (Chickenpox) 10) दाद (Ring Worm) 11) पोलिया (Polio) 12) खसरा (Measeles) 13) अन्दरूनी बुखार (Momps) 14) स्वाइन फ्लू (Swine Flue) 15) डेंगू (Dengue) 16) एड्स (AIDS)

इन सभी बीमारियों के बारे में विस्तृत जानकारी इस प्रकार से है :-

हैजा – खाद्य पदार्थ और पानी के माध्यम से होता है। इसका शरीर पर असर एक से पाँच दिन में दिखाई देता है।

लक्षण – पानी जैसा पायखाना होना, उल्टी होना, शरीर का सख्त हो जाना, शरीर का सफेद पड़ जाना, प्यास ज्यादा लगना और गला सुखना, पैर में दर्दनाक ऐंठन होना।

उपचार – पानी को उबाल कर ठंडा कर लें इसके बाद एक गिलास पानी में थोड़ा नमक, चीनी का मिश्रण बना कर रोगी को थेड़ी-थोडी देर पर दें या दवा की दूकान से ORS का घोल बना कर दें। अगर आराम नहीं हो रहा है तो तुरन्त चिकित्सक को अवश्य दिखायें।

ज्वर – खाद्य पदार्थ और पानी के माध्यम से होता है। इसका शरीर पर असर 14 - 21 दिन में होता है।

लक्षण – सिर दर्द, बुखार, नब्ज की धड़कन का कम होना, जीभ के ऊपर के हिस्से का सफेद होना।

उपचार – तुरन्त चिकित्सक को दिखाना चाहिए और खून की जाँच करानी चाहिए।

पीलिया – खाद्य पदार्थ और पानी के माध्यम से होता है। इसका शरीर पर असर 20 - 35 दिन में होता है।

लक्षण – पेशाब का रंग गाढ़ा पीला हो जाना, चेहरा और आँख का रंग पीला हो जाना, हल्का बुखार होना।

उपचार – कार्बोहाइड्रेड वाले खाद्य पदार्थ जैसे गन्ना, मूली, चावल, दही के सेवन के साथ आराम करना चाहिए। आवश्यकता होने पर चिकित्सक को दिखाना चाहिए।

फ्लू – हवा के माध्यम से संक्रमण होता है। इसका शरीर पर असर 1 - 3 दिन में होता है।

लक्षण – मतली/जी मिचलाना, सिर में दर्द के साथ शरीर में ऐंठन होना, छिंक, खाँसी, बलगम, हल्का बुखार होना।

उपचार – विक्स या अमृतांजन को गर्म पानी में डाल कर उसका भाप लें, आवश्यकता पड़ने पर चिकित्सक से परामर्श लें।

तपेदिक/क्षय रोग – हवा के माध्यम से होता है। इसका असर शरीर पर 4 - 6 दिन में होता है।

लक्षण – शरीर का वजन घटना, लगातार बलगम बनना, भूख कम लगना, शरीर में कमजोरी महसूस होना, छाती में दर्द होना, बदबुदार सांस निकलना, नब्ज की धड़कन का बढ़ जाना।

उपचार – बलगम की जाँच करायें। चिकित्सक द्वारा लम्बी अवधि का उपचार करायें। (यह उपचार सभी सरकारी अस्पतालों में मुफ्त में उपलब्ध है।)

मलेरिया – माईअनोफिलिस नामक मच्छर के काटने से होता है। इसका शरीर पर असर 10 - 14 दिन में होता है।

लक्षण – तेज ठंडी या गर्मी लगकर बुखार आना, तेज पसीना आना, पूरे शरीर में दर्द होना, उल्टी आना/ जी मिचलाना।

उपचार – चिकित्सक के पास जाकर खून की जाँच करवा करके मलेरिया की दवा लेना चाहिए।

टेटनस – जंग लगे लोहे से कट जाना, घाव/जख्म में धूल लगने से होता है। इसका शरीर पर असर दो दिन से लेकर दो हफ्ते के भीतर होता हैं

लक्षण – सिर दर्द, बुखार, गर्दन का अकड़ जाना, खाना चबाने निगलने में कठिनाई होना, मांसपेशियों, मसूड़ों और पुरे मुँह में ऐंठन और चेहरा विकृत आकार का होना, शरीर का पिछे के तरफ मुड़ कर धनुषाकार हो जाना।

उपचार – लोहे वाले सामान से कटने या चोट लगने पर टैटनस का टिका अवश्य लगवायें और रोगी को जंग लगे लोहे, गोबर से दूर रखें। अगर टैटनस का संक्रमण शरीर में फैल गया है, मुँह में, चेहरे पर ऐंठन होने पर रोगी के मुँह में कपड़े का एक गोला बना कर डाल दें जिससे दाँत, जीभ को न काट सके। रोगी को तुरन्त चिकित्सालय ले जाना चाहिए।

खाँसी, जुकाम – हवा, पानी, मौसम के बदलते समय यह होता है।

लक्षण – नाक बहना, नाक बन्द हो जाना, सिर में दर्द, गले में दर्द, हल्का बुखार के साथ-साथ पुरे शरीर में दर्द होना, अस्वस्थ महसूस होना, कम भूख के साथ खाने के स्वाद का पता न चलना, आलस, अनिद्रा।

उपचार – शरीर को मोटे कपड़े से ढकें जिससे की पसीना हो। आधा चम्मच शहद और आधा चम्मच अदरक का जूस एक चम्मच गर्म पानी में मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करना चाहिए या आधा कप गर्म पानी में एक चम्मच नींबू का रस और एक चम्मच शहद मिला कर दिन में तीन बार सेवन करना चाहिए। सुखी खाँसी है तो अदरक में नमक लगाकर चबाना चाहिए।

चेचक – हवा द्वारा चिकनपोक्स किटाणुओं से तथा चेचक वाले रोगी के छिंकने, खाँसने तथा रोगी के कपड़े और उसके इस्तेमाल किये गये सामान द्वारा।

लक्षण :- बुखार आना, चेहरा लाल हो जाना, शरीर और मुँह पर पहले लाल रंग के दाने पड़ जाना, उसके बाद उसमें पानी भर जाना। शरीर में दर्द होना, खुजली होना।

उपचार – रोगी के पास नीम की हरी पत्तीयाँ रखें, सफाई का पूरा ध्यान रखें। रोगी के कपड़े को गर्म पानी में डालकर उसकी सफाई करें। बिमारी होने से पहले एन्टी-चिकनपौक्स दवा लें। बुखार आने पर पैरासीटामोल, क्रोसिन दवा लें। खुजली होने पर कालामाइन लोशन या सोल्यूशन ऑफ सोडियम बाई कार्बोनेट लोशन चिकित्सक के परामर्श द्वारा प्रयोग करें।

दाद – नाखुन द्वारा खुजली करने से या दाद हुई जगह को खुजला कर दूसरे जगह पर छुने से तथा उसी हाथ से दूसरे व्यक्ति को छुने से होता है।

लक्षण – शरीर के किसी भी जगह लाल रंग का धब्बा बनना और घेरेदार बनकर दाने पड़ना। खुजली होना और